Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JAN-FEB, 2023, VOL- 10/75

डिजिटज संचार एवं ग्रामीण महिलाओं का वैधानिक सशक्तिकरण

राज कुमार (शोधार्थी)[१]
एवं
राकेश कुमार (एसोसिएट प्रो०)[२]
विधि संकाय आगरा कालेज, आगरा

Paper Received On: 21 FEBRUARY 2023
Peer Reviewed On: 27 FEBRUARY 2023
Published On: 01 MARCH 2023

शोध सार

ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण के विभिन्न पक्षों पर डिजिटल संचार साधनों इण्टरनैट फेसबुक एवं अन्य ऐप्लीकेशन्स के प्रभाव सकारात्मक हैं। वर्तमान समय में डिजिटल संचार के साधनों में इण्टरनैट, सोशल मीडिया एवं स्मार्ट फोन आदि प्रमुख हैं। ये सभी माध्यम तीव्र सामाजिक परिवर्तन और ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण तथा प्रभावी भूमिका निभा रहे हैं, यद्यपि इसके दुरूपयोग सम्बन्धी नकारात्मक प्रभाव भी दृष्टिगत हुए हैं। डिजिटल संचार क्रान्ति ने महिलओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक एवं सशक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है ।

शब्दावली: *सशक्तिकरण, सक्रिय भागीदारी, स्वावलम्बन, डिजिटल संचार।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

सशक्तिकरणः सशक्तिकरण एक प्रक्रिया है। जिसके माध्यम से जागरूकता, कार्यशीलता, बेहतर नियंत्रण के लिए प्रयास के द्वारा व्यक्ति अपने विषय में निर्णय लेने के लिए समर्थ एवं स्वतंत्र होता हैं। इस दृष्टि से देखें तो नारी का सशक्तिकरण एक सर्वांगीण व बहुआयामी दृष्टिकोण है। यह राष्ट्र निर्माण की मुख्य धारा में महिलाओं की पर्याप्त व सक्रिय भागीदारी में विश्वास रखता है। एक राष्ट्र का सर्वांगीण व समरसता पूर्ण विकास तभी संभव है जब महिलाओं को समाज में उनका यथोचित स्थान व पद दिया जाए। उन्हें पुरुषों के साथ-साथ विकास की सहभागी माना जाए। सशक्तिकरण के अंतर्गत महिलाएँ अपने आर्थिक स्वावलम्बन, राजनैतिक भागीदारी व सामाजिक विकास के लिए आवश्यक विभिन्न कारकों पर पहुँच व नियंत्रण प्राप्त करती हैं। अपनी शक्तियों व सम्भावनाओं, क्षमताओं व योग्यताओं तथा अधिकारों व जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक होती हैं। सशक्तिकरण शब्द का विच्छेद है स + शक्ति + करण। जिसमें 'स' उपसर्ग है। शक्ति संज्ञा है। विशेषण तथा करण प्रत्यय से मिलकर शब्द बना है- सशक्तिकरण। इसका ध्वनि अर्थ है- शक्ति सहित गत्यात्मकता (गति)। सशक्तिकरण एक विकासात्मक प्रक्रिया है। निरन्तर चलने वाली। निर्बल के सबल बनने की प्रक्रिया। एक पूर्ण सशक्त व्यक्ति वह है जो अपने जीवन से संबंधित निर्णय लेने में पूरी तरह

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

स्वतंत्र हो, घरेलू अथवा सामाजिक स्तर पर किसी प्रकार का दवाब न हो। इस प्रकार स्त्रियों के संदर्भ में सशक्तिकरण की अवधारणा अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाती है।

डिजिटल संचार की ग्रामीण महिलाओं के वैधानिक सशक्तिकरण में भूमिकाः स्वतंन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् सरकारी प्रयत्नों एवं लोगों में जागरूकता के बढ़ने से डिजिटज संचार के प्रचार प्रसार में आशातीत वृद्धि हुई है। जन संचार का तात्पर्य है कि कुछ विशेष प्रकार की सूचनाओं, जानकारियों, ज्ञान, विज्ञान, कला, साहित्य, संगीत, विकास कार्यक्रमों, राजनीतिक गतिविधियाँ सम्प्रेषण आदि को जन साधारण तक विशेष उपकरणों के माध्यम से पहुँचाना। आज विश्व के किसी भी भाग में घटित घटना को हम इण्टरनैट एवं डिजिटज संचार के माध्यम से कुछ ही क्षणों में सादृश देख सकते हैं जो कि इण्टरनैट एवं डिजिटज संचार की ही देन है। आधुनिक इण्टरनैट एवं डिजिटज संचार माध्यमों में स्मार्ट फोन एवं विभिन्न अनुप्रयोग जैसे फेसबुक, व्हाट्सएप आदि की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है।यह सर्व स्वीकार्य तथ्य है कि इण्टरनैट एवं डिजिटज संचार में तेजी के साथ अभिवृद्धि से ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण को सकारात्मकता तथा गुणात्मकता मिली है। यद्यपि ग्रामीण महिलाओं का सशक्तिकरण एक वृहद् तथा जटिल अवधारणा है। सामान्यतः लोग विकास का अर्थ अभिवृद्धि से लगाते हैं, तो कुछ रोजगार तथा जीवन की गुणवत्ता तथा वहाँ के निवासियों की आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति व सन्तुष्टि से। लेकिन प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि, विकास का संकुचित अर्थ नहीं माना जा सकता है।

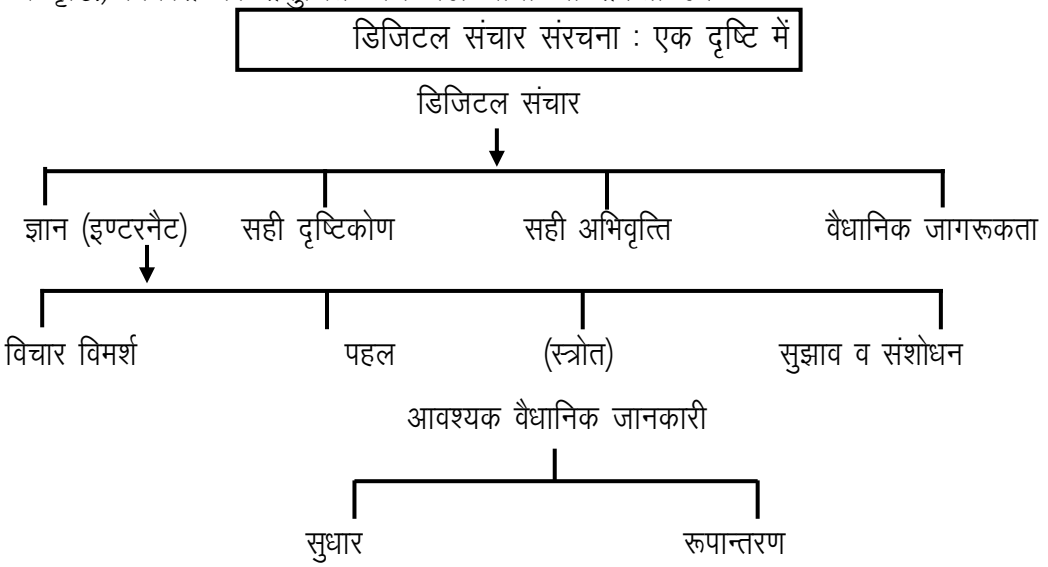

आय तथा वितरण में सुधार, रोजगार के अवसरों में सुधार, मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति तथा निर्धनता को कम करने सम्बन्धी उद्देश्य इसमें समाहित हैं। विकास का उद्देश्य मानव जीवन की गुणात्मकता का धनात्मक/सकारात्मक दिशा में सम्बर्द्धन, उत्थान, गरीबी रोजगारी तथा आर्थिक असमानता को दूर करना आदि को विकास की कुंजी समझा जा सकता है।

विश्लेषण एवं निष्कर्ष : ग्रामीण महिलाओं का सशक्तिकरण ; एक परम्परागत समाज का आधुनिक समाज में परिवर्तन की एक गतिशील प्रक्रिया है, जिसमें अभिवृद्धि करना'' विकास की एक सामान्य विशेषता है और सम्पूर्ण रूप से समाजार्थिक, साँस्कृतिक, शैक्षिक, राजनैतिक तथा स्वास्थ्य आदि आयामों सहित अन्यान्य पहलू निहित हैं।

तालिका (1) : ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण के प्रमुख पक्षों पर डिजिटज संचार के प्रभाव

क्रमांक	विकास के विभिन्न सामाजिक पहलुओं (आयाम) पर प्रभाव	सूचनादाताओं के विचार (आवृत्तियाँ/प्रतिशत)				
		हाँ	नहीं	उदासीन	अनुत्तरित	योग
1.	संवैधनिक अधिकार एवं विधिक ज्ञान में वृद्धि होना	270 (90.00)	20 (06.67)	10 (03.33)	– (00.00)	300 (100.00)
2.	जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि एवं सुधार होना	300 (100.00)	– (00.00)	– (00.00)	– (00.00)	300 (100.00)
3.	मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति होना	216 (72.00)	– (00.00)	84 (28.000)	– (00.00)	300 (100.00)
4.	गतिशीलता में अभिवृद्धि होना	198 (66.00)	– (00.00)	93 (31.00)	09 (63.00)	300 (100.00)
5.	राष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं की शक्ति में वृद्धि	300 (100.00)	– (00.00)	– (00.00)	– (00.00)	300 (100.00)
6.	साक्षरता एवं शैक्षिक स्तरों में वृद्धि होना	264 (88.00)	– (00.00)	36 (12.00)	– (00.00)	300 (100.00)
7.	आर्थिक विषमता में सुधार होना	195 (65.00)	– (00.00)	36 (12.00)	00 (00.00)	300 (100.00)
8.	आधुनिक समाज में परिवर्तन (गतिशीलता)	300 (100.00)	– (00.00)	– (00.00)	– (00.00)	300 (100.00)
9.	जीवन सेवाओं एवं सुविधाओं में वृद्धि तथा बेहतर जीवन स्तर	243 (81.00)	39 (13.00)	– (00.00)	06 (02.00)	300 (100.00)
10.	उत्पादक क्रियाकलापों में वृद्धि	276 (92.00)	21 (07.00)	03 (01.00)	– (00.00)	300 (100.00)
12.	बेरोजगारी उन्मूलन के प्रयास	267 (89.00)	– (00.00)	30 (10.00)	03 (01.00)	300 (100.00)
13.	लैंगिक समानता की प्राप्ति में सहायक	189 (63.00)	18 (06.00)	93 (31.00)	– (00.00)	300 (100.00)
14.	महिला अपराधों के प्रति जागरूकता एवं सशक्तिकरण	279 (93.00)	– (00.00)	21 (07.00)	– (00.00)	300 (100.00)
15.	राजनैतिक विकास होना	240 (80.00)	09 (03.00)	39 (13.00)	03 (01.00)	300 (100.00)
16.	स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता वृद्धि	252 (84.00)	09 (03.00)	39 (13.00)	– (00.00)	300 (100.00)

प्रस्तुत तालिका (१) के प्राथमिक तथ्यों के विश्लेषणे तथा सूचनादाताओं के अभिमतों के जानने से स्पष्ट होता है कि सभी ३०० सूचनादाताओं में से २७० (९०.०० प्रतिशत) सूचनादाताओं ने संवैधनिक

अधिकार एवं विधिक ज्ञान में वृद्धि होना, शतप्रतिशत सूचनादाताओं ने जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि एवं सुधार होना, २१६(७२ प्रतिशत) सूचनादाताओं ने जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति होना, १९८(६६ प्रतिशत) सूचनादाताओं ने जीवन के हर क्षेत्र में याँत्रिकीय अभिवृद्धि होना, शतप्रतिशत सूचनादाताओं ने प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि तथा औसत राष्ट्रीय आय में वृद्धि, २६४(८८ प्रतिशत) सूचनादाताओं ने साक्षरता एवं शैक्षिक स्तरों में वृद्धि, १९५(६५ प्रतिशत) सूचनादाताओं ने आर्थिक विषमता में कमी (सुधार) होना, शतप्रतिशत सूचनादाताओं ने सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि, २४३(८१ प्रतिशत) सूचनादाताओं ने जीवन सेवाओं एवं सुख सुविधाओं में वृद्धि तथा बेहतर जीवन स्तर, शतप्रतिशत सूचनादाताओं ने जन साधारण के जीवन स्तरों में सतत गुणात्मक सुधार, २७६(९२ प्रतिशत) सूचनादाताओं ने उत्पादक क्रियाकलापों में वृद्धि होना, २६७(८९ प्रतिशत) सूचनादाताओं ने बेरोजगारी उन्मूलन के प्रयास १८९(६३ प्रतिशत) सूचनादाताओं ने लैंगिक समानता मे वृद्धि, २७९(९ प्रतिशत) सूचनादाताओं ने महिला अपराधों के प्रति जागरूकता (क्रियान्वयन), २४०(८० प्रतिशत) सूचनादाताओं ने राजनैतिक विकास होना, २५२(८४ प्रतिशत) सूचनादाताओं ने स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता में वृद्धि होना स्वीकार किया है।

निष्कर्षः प्राथमिक तथ्यों के प्रकाश में यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण के विभिन्न पक्षों पर डिजिटल संचार साधनों इण्टरनैट फेसबुक एवं अन्य ऐप्लीकेशन्स के प्रभाव सकारात्मक हैं। वर्तमान समय में डिजिटल संचार के साधनों में इण्टरनैट, सोशल मीडिया एवं स्मार्ट फोन आदि प्रमुख हैं। ये सभी माध्यम तीव्र सामाजिक परिवर्तन और ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण तथा प्रभावी भूमिका निभा रहे हैं, यद्यपि इसके नकारात्मक प्रभाव भी दृष्टिगत हुए हैं।

References:

Chitra B. (2013). How Do Electronic Transfers Compare? Evidence from a Mobile Money Cash Transfer Experiment in Niger. Tufts University Working Paper.

Chahar D. (2016) Algorithmic hotness: young women's "promotion" and "reconnaissance" work via social media body images. Soc Media Soc, 2(4).

Chaturvedi R. (2015). Do digital information and communications technologies increase the voice and influence of women and girls. A rapid review of the evidence. Overseas Development Institute. Keeley, Brian, and Céline Little.

Madhu Mathur. (2014). Role of ICT education for women empowerment." International Journal of Economics and Research 3.3: 164-172.

Malhotra, R. (2015). Empowering Women through Digital Technology: An Indian prospective. International Journal of Business Management.

Nair U. (2007). Empowering Women Through ICT-Based Business Initiatives: Best Practices in E-Commerce/E-Retailing Projects overview. Information Technologies and International Development, Special Issue on Women's Empowerment and the Information Society, 4(2), 43-60.

Paras Nath (2018). Empowerment and governance through information and communication technologies: women's perspective. The International Information & Library Review

33.4 317-339. Notermans, Catrien. "Prayers of cow dung: Women sculpturing fertile environments in rural Rajasthan (India)."

Singh S. D. (2019). Women managers and entrepreneurs and digitalization: on the verge of a new era or a nervous breakdown? Technology Innovation Management Review 9.6 Women, Connected.

The State of the Worlds Children 2017: Children in a Digital World. UNICEF. 3 United Nations Plaza, New York, NY 10017, 2017.

"The mobile gender gap report 2018." GSMA, London Retrieved from https://www. gsmaintelligence. com/research (2019).